☆ पार्टी को बोल्शेवीकरण करने के अभियान को सफल बनायेंगे! जन आधार को मजबूत करेंगे।

☆ पीएलजीए को पीएलए में विकसित करने के लिए बड़ी संख्या में नौजवान को भर्ती करेंगे!

☆ जनता की राजनीतिक सत्ता के अंगों को निर्माण करने के लिए जनता का सहयोग करेंगे!

☆ पीएलजीए को हथियारबंद करने के लिए दुश्मन से हथियार छीन लेंगे!

☆ जनयुद्ध को तेज करेंगे! जनता पर चौतरफे हमले 'आपरेशन ग्रीन हंट' को हरायेंगे!

☆ जनता से घुलमिल जायेंगे! जनता की सेवा करेंगे!

☆ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

केंद्रीय मिल्ट्री कमीशन,

5 अक्टोबर 2014

भाकपा (माओवादी)

जनयुध्द-गुरिल्ला युध्द को तेज करेंगे!
कठिन परिस्थिति का सामना करने योग्य पीएलजीए में पार्टी कमेटियों व कमानों को सैध्दांतिक रुप से विकसित करेंगे!!

पीएलजीए की 14वीं वर्षगांठ को
दिसम्बर 2 से 8 तक जोरशोर से मनाने के लिये

सभी पार्टी कतारों, पीएलजीए तथा जनमिलिशिया बलों, और क्रांतिकारी जन कमेटियों व जनसंगठनों को
केंद्रीय मिल्ट्री कमीशन – भाकपा (माओवादी) का आह्वान!

प्रिय कामरेडो!

2 दिसम्बर 2000 का दिन भारतवर्ष में पहली बार भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के नेतृत्व में, भारतीय क्रांति के महान नेता, हमारे शिक्षक कामरेड चारुमजुमदार व कामरेड कन्हाई चटर्जी की निर्देशन के अनुसार जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) गठन होने का ऐतिहासिक दिन है। आगामी दिसम्बर 2 को वह अपनी 14वीं वर्षगांठ मनाने जा रही है। वर्तमान में हम हमारी एकिकृत पार्टी भा.क.पा. (माओवादी) का 10 सालों का उत्सव जोरशोर से मना रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग की सेना की एक टुकड़ी - हमारी पार्टी के हाथ में एक तेज हथियार के रूप में खड़े होकर, विश्व समाजवादी क्रांति के अंतर्गत भारतवर्ष में नवजनवादी जनतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के लिए, हमारे प्रिय नेता कामरेड श्याम, महेश व मुरली के सपनों को साकार करते हुए, हजारों अमर शहीदों के खून से सने रास्ते में, करोड़ों मजदूर-किसान व अन्य पीड़ित वर्ग की जनता के असीम बलिदानों के रास्ते में, जनयुद्ध के पथ पर अग्रसर पीएलजीए की 14वीं वर्षगाठ को दिसम्बर 2 से 8 तक जोरशोर मनायेंगे। इस दशाब्दि में जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए उसकी तरफ से किये गये प्रयास को व्यापक जनता के बीच ले जायेंगे। जनता पर युद्ध-'आपरेशन ग्रीन हंट' को हराने की लक्ष्य से जनता को जनयुद्ध में बड़े पैमाने पर गोलबंद करने का, केंद्रीय मिल्ट्री कमीशन (सीएमसी), भा.क.पा. (माओवादी) सभी पार्टी कतारों व पीएलजीए तथा जनमिलिशिया बलों को और क्रांतिकारी जनकमेटियों व जनसंगठनों को यह आह्वान करता है।

पिछले दिसम्बर से अब तक साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरीकी साम्राज्यवादियों की पूरी मदद व उनके निर्देशन में भारत के शासक वर्गों के द्वारा तीव्र गति से जारी देशव्यापी फासीवादी चौतरफा हमला, जनता पर युद्ध-'आपरेशन ग्रीन हंट' के खिलाफ वीरोचित ढंग से लड़ते हुए, हमारे देश की मेहनतकश जनता की 90 से ज्यादा (अखिल भारतीय-2, बिहार-झारखण्ड-29, दंडकारण्य-46, आंध्रा-ओड़िशा बार्डर-9, ओड़िशा-1, तेलंगाना-1, आंध्रप्रदेश-3, गुजरात-1, केरल-1 पश्चिम बंगाल-1) प्यारे बेटियों और बेटों ने अपनी अनमोल जानों की कुर्बानी दी। इसमें 13 महिला कामरेड्स हैं। लंबे समय से भारतीय क्रांति का नेतृत्व करते हुए, उसको दीर्घकालीन लोकयुद्ध के पथ पर आगे ले जाने में अतुलनीय प्रयास करनेवाले हमारी पार्टी के पोलितब्यूरो सदस्य कामरेड सुशील राय और सीसीएम कामरेड रऊफ; सीनियर कामरेड करदम भट (गुजरात), सिनोज (केरल); सीनियर महिला कार्यकर्ता कामरेड गज्जला सरोजना,

खतरे में डाल दिया है। महंगाई ओर बढ़ गई है। रेल किराया, पेट्रोल व डीजल दामों को बढ़ना से वह और गंभीर हो गयी है। काला धन को बाहर लाने का उसका वादा एक झूठ साबित होने में और ज्यादा दिन नहीं लगेंगे। हाल ही में बहुत ही जोरशोर से शुरू की गयी 'प्रधान मंत्री जन धन योजना' से पीड़ित जनता को खास फायदा नहीं होगा। दूसरी तरफ हिंदू संघ परिवार देश के कई जगहों पर अपनी हिदूत्व एजेण्डा को लागू करते हुए अल्पसंख्यकों, कश्मीर व उत्तर-पूर्वी के पीड़ित राष्ट्रीयताओं, दलितों, महिलाओं पर हमले में बढ़ोत्तरी, मोदी सरकार से शिक्षा को **भगवाकरण** करने की योजनाओं को लागू करना, संस्कृत भाषा को फिर से जीवन देने की कोशिशें आदि हिंदूत्ववादी कार्रवाइयों के द्वारा संघ परिवार, उसकी मोदी सरकार का असली एजेण्डा क्या है उजागार हो गया है। यह बढ़ते ब्राह्मणवादी हिंदू फसीवाद का संकेत है। कुल मिलाकर मोदी सरकार अपने सौ दिन के शासन में मजदूर-किसान, मध्यम वर्ग, अन्य पीड़ित वर्ग व तबकों के खिलाफ कई नीतियों व कार्रवाईयों को लेकर अपने असली चेहरे को उजागर की है। इस के खिलाफ अभी देश में कई जगहों पर जनता में तीव्र **आक्रोश** है। **ये** सभी परिस्थितियां क्रांति और जनयुद्ध के लिए अनुकूल है।

दुनियाभर में **बनी** अनुकूल क्रांतिकारी परिस्थिति को हम सही ढंग से इस्तेमाल करेंगे। विश्व समाजवादी क्रांति को सफल बनने, इस के तहत अपने देश में पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए साहसिक ढंग से संघर्ष करते हुए जनयुद्ध को आगे बढ़ायेंगे। पार्टी, जनसेना व संयुक्त मोर्चा को मजबूत करेंगे। जनाधार को बढ़ाते हुए जनयुद्ध में जनता की भागीदारी को बढ़ाने के लिए ध्यान देंगे। साम्राज्यवादियों व उनके भारतीय दलाल शासक वर्गों की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जन आंदोलनों को तेज करेंगे। वर्ग संघर्षों को बढ़ाते हुए आधार इलाकों की स्थापना के लक्ष्य से नये विस्तार इलाकों को लालप्रतिरोध इलाकों में, गुरिल्ला जोनों में व लाल प्रतिरोध इलाकों को गुरिल्ला जोनों में तब्दील करेंगे। गुरिल्ला जोनों को आधार इलाकों में विकासित करेंगे। भारतवर्ष में नवजनवादी क्रांति की गारंटी देने वाले मजदूर-किसान, अन्य पीड़ित जनता को हथियारबंद करते हुए जनमुक्ति छापामार सेना को जनमुक्ति सेना में विकासित करेंगे। इसके लिए देश के मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग, छात्र-छात्रायों, नौजवानों, कलाकारों, बुद्धिजीवियों, अल्पसंख्यकों, महिलाओं, आदिवासियों, दलितों, पिछड़े तबकों, जनवादियों, देशभक्तों से केंद्रीय मिल्ट्री कमीशन का आह्वान है कि जनयुद्ध में शामिल हो जायें। **सहास के साथ लड़ेंगे. अंतिम जीत जनता की होगी.**

शांतक्का; गोंदिया डिवीजन (डीके) जैसे कामरेडों ने जनयुद्ध में अपनी भूमिका निभाते हुए अंतिम शांस ली। क्रांतिकारी व मानव अधिकार आंदोलन के नेता व बुद्धिजीवी कामरेड सुनिति कुमार घोष, एम.टी. खान अंतिम सांस तक पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए दृढ़ता से खड़े हुए तथा बुढ़ापे से शहीद हुए। जनतांत्रिक तेलंगाना आंदोलन के नेता कामरेड आकुला भूमैया की लुटेरी राज्य द्वारा हत्या की गयी। इस सालभर में शहीद होनेवालों में लगभग 30 कामरेड दुश्मन से जारी छलकपटपूर्ण युद्ध - फर्जी मुठभेड़ व प्रतिक्रांतिकारी आक्रमणों में; 20 से ज्यादा जनता दुश्मन व्दारा किये गये नरसंहारों में अपनी जानों का बलिदान दिया। लगभग 30 कामरेड दुश्मन के बलों से हुए घमासान संघर्षों में साहसिक ढंग से लड़ते हुए शहीद हुए। दो कामरेड दुश्मन के बलों पर पीएलजीए द्वारा किये गये हमलों में वीरोचित ढंग से लड़ते हुए अपने प्राण न्योछावर किये। जेलों में अमानवीय परिस्थितियों के खिलाफ लड़ते हुए कुछ जन और महमारी बीमारियों के वजह से तथा अन्य दुर्घटनावश कुछ जन कामरेड अंतिम शांस लिये।

इसी दौरान विश्व समाजवादी क्रांति के तहत फिलिप्पीन, तुर्की, बंगलादेश और पेरू में; साम्राज्यवादी देशों के सर्वहारा क्रांतिकारी आंदोलनों में; साम्राज्यवादी आक्रामक युद्धों का सामना कर रहे दशों तथा अन्य देशों के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों में और पूरे विश्व में सभी तरह के प्रतिक्रियावादियों से लड़ते हुए कई माओवादियों, मजदूरों, छात्रों, बुद्धिजीवियों, जनवादियों, कर्मचारियों, महिलाओं व अन्य लोगों ने दुनियाभर में अपनी जानें न्योछावार की हैं।

सीएमसी, भा.क.पा. (माओवादी) इन सभी प्यारे शहीदों को पीएलजीए की 14वीं वर्षगांठ के अवसर पर सिर झुकाकर विनम्रता से श्रद्धांजली पेश करता है। ये जनयोद्धा मृत्युंजय हैं। हम सभी को चाहिये कि हम हमेशा इन जनयोद्धाओं को, शहीदों को अत्यंत सम्मान दें। उनसे मिली स्फूर्ती से, उनके व्दारा छोड़े गये कार्यभारों को पूरा करने के लिए उनके लक्ष्यों व आदर्शों को ऊंचा उठाना चाहिए। उनका संघर्ष, त्याग और जीत हमें हमेशा प्रेरित करते रहेगी। इस प्रेरणा को लेकर उनकी आकांक्षाओ और अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए दृढ़संकल्प के साथ संघर्ष करने की कसम खायेंगे। सीएमसी, शहीदों के उन्नत व निस्स्वार्थ लक्ष्यों को पूरा करने के लिए **उनके आर्दशों को** आत्मसात **करने** का आह्वान करती है।

सीएमसी आशा करता है कि जंग-ए-मैदान में दुश्मन से लोहा लेते हुए जख्मी हुए तमाम साथी जल्द दुरुस्त होकर युद्ध के मैदान में कूद पड़ेंगे।

जंग-ए-मैदान में उनके द्वारा प्रदर्शित हिम्मत व साहस को सीएमसी क्रांतिकारी सलाम पेश करता है।

क्रांतिकारी आन्दोलन में कुरबानियां अनिवार्य हैं। लेकिन पिछले साल हुये कुछ नुकसानों को टाला जा सकता था। गुप्त कार्यशैली और गुरिल्ला युद्ध के नियमों को लागू करने में हो रही गलतियों की वजह से इस तरह के नुकसान हो रहे हैं। पार्टी और पीएलजीए की निचली से ऊपरी स्तरों तक सभी को इन नुकसानों से उभरने का प्रयास करना जरूरी है।

प्रिय कामरेडों!

भारत के शोषक-शासक वर्गों को क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार और एक वैकल्पिक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरना बिलकुल सहन नहीं हो रहा है. वे साम्राज्यवादियों के उकसावे के साथ इस आन्दोलन का सफाया कर अपनी नव-उदारवादी नीतियों को बेरोकटोक लागू करने के उद्देश्य से पिछले पांच सालों से आपरेशन ग्रीनहंट चला रहे हैं. इस के दूसरे चरण का सालभर हमारे पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए बलों ने तीव्रता से प्रतिरोध किया है। जनमिलिशिया व जनता की मदद से क्रांतिकारी आंदोलन व पार्टी नेतृत्व को बचाते हुए जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए गंभीर प्रयास किये हैं।

खासकर, संगिनों के साये में लोक सभा चुनाव को संचालित करने के लिए दुश्मन के बलों द्वारा जारी हमलों को झूठे चुनावों के बहिष्कार अभियान के दौरान विभिन्न गुरिल्ला जोनों में हमारे पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए बलों ने जनता व जनमिलिशिया को संगठित करते हुए मुकाबला किया। आंदोलन जहां मजबूत है वहां चुनाव बहिष्कार अभियान को सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाई। चुनाव के पहले व उसके बाद उसने कई कार्यनीतिक जवाबी हमलों को संचालित किया। क्रांतिकारी आंदोलन पर जहर उगलानेवाले कुछ राजनेताओं को मौत के घाट उतार दिया। गुरिल्ला जोनों में जनाधार पर निर्भर होकर दुश्मन के मुखबिरी जाल को ध्वस्त करने के प्रयास किये। टीपीसी व सलवा जुडूम जैसे प्रतिक्रांतिकारी गिरोह के नेताओं व गुण्डों पर हमले कर सफाया किया। इस सालभर में बिहार-झारखण्ड, दंडकारण्य (छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र), ओड़िशा, एओबी, तेलंगाना में कुछ बड़ी कार्रवाइयों के साथ, लगभग 60 मध्यम व छोटे किस्म के हमलों को संचालित करते हुए दुश्मन के बलों की नींद हराम कर दी।

बिहार में तीन पुलिस जवान को मारकर, एक थानेदार सहित 8 जवानों को घायल किया गया. बरंडा मोड़ (औरंगाबाद) घटना में पीएलजीए ने बूबीट्राप

देशों से आंदोलनकारियों ने जमा होकर पर्यावरण को खतरे में डालनेवाली साम्राज्यवादियों की साजिशों को फिर एक बार उजागर कर दिया है। दूसरी तरफ साम्राज्यवादियों के बीच तीखे होते अंतरविरोधों के लिए युक्रेन एक केंद्र बन गया है। ब्रिक्स संगठन को मजबूत करने के लिए रूस व चीन के तीव्र प्रयास जारी है। एशिया-प्रशांत सागर इलाके में चीन तथा जापान व अमेरीकी साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोध और तीखे हो गये हैं।

हमारी देश में 'विकास' के लिए 'सुशासन' नारा को लेकर सत्ता में बैठी मोदी नेतृत्व की भाजपा सरकार अपने सौ दिन के शासनकाल में प्रत्येक समस्या के लिए किसी न किसी (मोदी) फारमुले अलापते हुये नाच करती आ रही है. पहले देश को विकास करने का दावा करते हुए हजारों करोड़ डालर एफ.डी.आई. (विदेशी प्रत्यक्ष निवेश) के लिए अमेरीका, जापान, चीन व रूस की पूंजि के लिए देश को पूरी तरह खोल दिया। एफडीआई का मतलब साम्राज्यवादियों के द्वारा प्रत्यक्ष लूट के अलावा कुछ नहीं है। इस पर परदा डालने के लिए और एफडीआई के बारे में जनता के विरोध को भटकाने के लिए एफडीआई के संक्षिप्त नाम का वैकल्पिक तौर पर 'फस्ट डेवलप इंडिया' के चमकीले मुहावरे को, हाल ही में शुरू किये गये 'मेक इन इंडिया' अभियान के तहत प्रचार में लाया गया है। एक तरफ देश के 125 करोड़ लोगों को अत्यंत प्रभावशाली कहकर ढिंढोरा पीट रहा है दूसरी तरफ देश के विकास के लिए विदेशी पूंजी बिना और कोई चारा नहीं होने के प्रचार में व्यस्त है। यह भी देश की समप्रभुता और जनता की इज्जत को बेचने के अलावा कुछ नहीं है।

इस तरह मोदी सरकार देश की पीड़ित जनता की मौलिक समस्याओं - जल-जंगल-जमीन, सत्ता, इज्जत, अधिकार, गरीबी, बेरोजगारी, बढ़ती महंगाई, अकाल, बाढ़, जलवायु परिवर्तन, महिला, दलित, व पीड़ित राष्ट्रीयताओं पर उत्पीड़न व दमन वगैरह से जनता को भटकाते हुए, साम्राज्यवादियों, उनकी देशीय दलालों को मूलभूत सुविधा उपलब्ध करवाते हुए उन्हें देश को पूरी तरह लूटने का मौका दे रही है। भारतीय योजना आयोग को समाप्त करते हुए देश के भविष्य को पूरी तरह कार्पोरेट घरानों की हाथों में छोड़ रही है। मोदी सरकार द्वारा पारित से वह 'यूपीए-3' बजट के रूप में प्रचार हो गया। 500 स्मार्ट सिटी, बुल्लेट ट्रेनों की योजनाओं के द्वारा कार्पोरेट जगत को छूट देने के अलावा जनता को कुछ भी फायदा नहीं है। तेलंगाना जनता की आकांक्षाओं के खिलाफ पोलवरम बिल को पारित करना, उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ सरदार सरोवर (नर्मदा) बांध की ऊंचाई बढ़ा कर लाखों आदिवासियों के जीवन को

जनता से गद्दारी करना बहुत ही **नीच काम हैं.** इस विचार का प्रचार करते हुए उनके गद्दारी कामों को, उनके असली चेहरे को जनता में जब के तब **बेनकाब** करना चाहिए। जनता के हितों को धोखा देने वाले गद्दारी कामों पर जरूर थूकने लायक **जनता की** वर्ग चेतना को बढ़ाना होगा और इसे एक जन आंदोलन के रूप में विकसित करना होगा। बोल्शेवीकरण अभियान के तहत इस विषय के बारे में पार्टी व पीएलजीए कतारों व जनता की चेतना को बढ़ाना चाहिए।

केंद्रीय मिल्ट्री कमीशन का आह्वान :

प्रिय कामरेडों व जनता!

देशीय व अंतरराष्ट्रीय वस्तुगत परिस्थितियों में अभूतपूर्व ढंग से क्रांति के लिए अनुकूल बदलाव आ रहे हैं। 2008 में साम्राज्यवाद आर्थिक व्यवस्था **विश्वव्यापी** संकट में फंसने के बाद, विश्व में मौलिक अंतरविरोध तीखे होते जा रही हैं। साम्राज्यवादी नई-उदारवादी आर्थिक नीतियों के परिणामस्वरूप साम्राज्यवादियों - पीड़ित राष्ट्रीयताओं व पीड़ित जनता के बीच अंतरविरोध दिन ब दिन तीखे होते जा रहे हैं। अमीर और गरीबों के बीच खाई बढ़ रही है। पिछले दस सालों में दुनिया के करोड़पतियों की संख्या में 58 प्रतिशत और **अरबपतियों** की संख्या में 71 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई। इससे नई-उपनिवेश, अर्द्ध-उपनिवेश, अर्द्ध-सामंती देशों में साम्राज्यवादियों व उनके दलाल/कठपुतिली शासक वर्गों के खिलाफ आंदोलन बढ़ते जा रहे हैं। पूंजिपती देशों में पूंजिपती वर्ग के खिलाफ बड़े पैमाने पर मजदूर आंदोलनों तेज हो रहे हैं। इराक में मजबूत हो रहा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन साम्राज्यवादियों के लिये एक बड़ी चुनौती बन गया है। पश्चिम एशिया में अपने लुटेरी हितों के लिए साम्राज्यवादियों ने अमेरीकी नेतृत्व में 50 से ज्यादा साम्राज्यवादी व उनके दलाली देशों से एक गठबंधन बनाकर इराकी गुरिल्लाओं के खिलाफ बड़े पैमाने पर वैमानिक बम हमले शुरू करने से वहां फिर एक बार युद्ध माहोल बन गया है। 'इस्लामिक उग्रवाद' को नेस्तनाबूत करने के नाम पर उन्होंने जन आवासीय इलाकों पर हवाई हमले करते हुए इराक व सिरिया के लोगों का सामूहिक **नरसंहार** कर रहे हैं। उनके घर व संपत्तियों को ध्वस्त कर रहे हैं। उन देशों की अर्थ व्यवस्थायें पूरी तरह तहस-नहस होती जा रही हैं। अफ्गानिस्तान में तालिबान के प्रतिरोध तेज होने की वजह से अमेरीकी नेतृत्व के नाटो बलों को वहां से पूरी तरह हटाना नामुमकिन हो गया है। गाजा पर इज्राइल के ताजा हमलों का भण्डाफोड़ करते हुए फिलिस्तीनी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोनलनकारी साहसिक ढंगे से मुकाबला कर रहे हैं। पर्यावरण परिवर्तन की समस्या पर हाल ही में न्यूयार्क में हुये विश्व सम्मेलन के सामने दुनियाभर से कई

कार्यनीति को प्रभावशाली ढंग से लागू किया। झारखण्ड बस में पोलिंग पार्टी व सामग्री को ले जाते समय पुलिस पर बारूदी सुरंग विस्फोट कर पांच पुलिस जवानों को मारकर, कइयों को घायल किया, फरसागांव (दुमका) एम्बुश; दंडकारण्य में रोड़ ओपनिंग करके कायराना ढंग से एम्बुलेंस गाड़ी की आड़ में वापस जाते सीआरपीएफ बलों पर बारूदी सुरंग विस्फोट कर पूरी आरओपी **पार्टी को निशाना बनाया गया** (6 जवान मारे गये और 4 घायल हुए). कामानार (सुकमा) एम्बुश - गस्त **से** वापिस जाते पुलिस गस्ती वाहन को निशाना बनाकर बारूदी सुरंग विस्फोट कर पूरे गस्ती दल को छोट पहुंचाने वाले (7 जवान मारे गये और 4 घायल हुए), मुर्मुरी (गड़चिरोली) एम्बुश में पीएलजीए ने माइन युद्धतंत्र को अच्छी तरह लागू किया। प्रतिक्रांतिकारी टीपीसी बलों का पीछाकर साहसिक ढंग से 16 टीपीसी गुण्डों का सफाया किया गया छोटीकौरिया (पलामू) एम्बुश के द्वारा पीएलजीए ने टीपीसी को **हिला कर रख दिया**। दंडकारण्य में 40 से ज्यादा संख्या में पैदल आनेवाली पुलिस की रोड़ ओपनिंग पार्टी (आरओपी) पर राष्ट्रीय राजमार्ग पर मैदानी इलाका में हमला कर आधे से अधिक जवानों को नुकासान करने वाले (15 जवान मारे गये और 10 घायल हुए) टाहकावाड़ा (सुकमा) एम्बुश दुश्मन को बहुत ही परेशान कर दिया। इस एम्बुश में पीएलजीए बलों ने दृढ़संकल्प के साथ साहस, तकनीक, तेज गती व अचूक निशानबाजी को प्रभावशाली ढंग से लागू कर सफलता हासिल की। कामानार एम्बुश में चारों तरफ पुलिस कैंपों का घेरा होने बावजूद, हमारी एम्बुश टीम अपनी गुप्तता को बचाते हुए, आखिर एम्बुश साइट के पास गड्ढे खोदकर (ट्रेंच बनाकर) एम्बुश को सफल बनायी। इन सभी को बड़ी कार्रवाइयों **गिना जा सकता है।**

इसी अवधी में झारखण्ड में दो पुलिसवालों को मारकर और 15 को घायल करने वाले पीरटांड (गिरिडीह) एम्बुश; बिहार में दो पुलिसवालों को मारकर 6 को घायल करने वाले गंती (जमुई) एम्बुश; दो पुलिसवालों को मारकर 7 को घायल करने वाले बाबा मंदिर (जमुई) एम्बुश; दंडकारण्य में सीआरपीएफ के एक सहायक कमांडेंट सहित दो जवान को मारकर 12 को घायल करने वाले बोदिरास (सुकमा) एम्बुश, मोटार साइकल पर आने वाले आरओपी पर सरप्राइज हमला कर एक थानेदार सहित पांच पुलिसवालों को मारकर तीन को घायल करने वाले सांगड़ी-खुटेपाल (दंतेवाड़ा) एम्बुश; तीन कोबरा पुलिस कमांडो को मारकर एक उपकमांडेंट सहित पांच को घायल करने वाले चिंतागुफा (सुकमा) एम्बुश, एक सी-60 कमांडो को मारकर और पांच को घायल करने वाले आशा (गड़चिरोली) एम्बुश जैसी मध्यम किस्म की कार्रवाइयों के साथ, लगभग 50

तक छोटी किस्म की कार्रवाइयों, बूबीट्राप विस्फोटों तथा हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयों को संचालित किया गया।

साप्ताहिक हाट बाजारों में अकेले घुमनेवाले पुलिस जवानों का पीछा कर उनकी कमजोरियों का इस्तेमाल करते हुए पीएलजीए एक्शन टीमों के द्वारा कई जवानों को मार गिराया गया। उनके पास से हथियार जब्त किये गये। अचूक निशानेबाजी में निपुणता हासिल करते हुए कुछ पीएलजीए टीमों के द्वारा पुलिसवालों पर प्रभावशाली ढंग से हमले किये गये। रणनीतिक इलाकों में व गुरिल्ला जोनों में घुसनेवाले दुश्मन के संयुक्त कूम्बिंग दलों पर घात लगाकर हमले किये गये। कुछ जगहों पर इस तरह का वातावरण बना दिया कि इन इलाकों में पैर रखने पर खून बहाये बिना सुरक्षित वापस जाना नामुम्किन है।

इतना ही नहीं, पीएलजीए बलों ने केंद्र व राज्य सरकारों व बहुराष्ट्रीय कंपनियों व दलाल नौकरशाह पूंजिपति व सामंत वर्गों की संपत्तियों पर दसियों की संख्या में ध्वस्त कार्रवाइयों को संचालित कर दसियों करोड़ रूपयों का नुकसान किया। राज्य हिंसा के खिलाफ जनता व जनमिलिशिया को संगठित कर जनप्रतिरोध आंदोलन को आगे बढ़ाया। पुलिस के हमलों, गैरिकानूनी गिरफ्तारियों, महिलाओं पर पुलिस अत्याचारों व जनता की संपत्ति को ध्वस्त करने व लूटपाट के खिलाफ; पुलिस कैंपों हटाने की मांग करते हुए, हाल ही में निर्माण हो रहे पुलिस कैंपों के खिलाफ जनता ने हर संभव कोशिशों को साथ बिना हथियार से व हथियार के साथ प्रतिरोध किया। हर्रा कोडेर के जनप्रतिरोध (पूर्वी बस्तर, दंडकारण्य) बिना हथियार व शांतिपूर्ण ढंग से संचालित कर वहां से नवनिर्मित पुलिस कैंप को हटाने वाले आंदोलन की एक मिसाल है। वैसे ही चुनाव के संदर्भ में हजारों जनता व जनमिलिशिया ने गोलबंद होकर कई तरह के हजारों परंपरागत ट्रापों (गड्ढे, कीलें गाड़ना, तीर-धनुष फिट करना) का इस्तेमाल किया. उन फंदों में फंसाकर दुश्मन के कई जवानों को घायल कर परेशान किया गया।

कुल मिलाकर इस सालभर में पीएलजीए द्वारा दुश्मन के बलों पर चलाये गये कार्यनीतिक जवाबी हमलों में व कार्यनीतिक जवाबी अभियानों (टीसीओसी) में 70 से ज्यादा भाड़े की पुलिस, कमांडो व अर्द्धसैनिक बलों का सफाया किया गया और 132 को घायल किया गया। लगभग 53 हथियार, 5 हजार गोली व अन्य सैनिक सामग्री को जब्त किया गया। 90 से ज्यादा जनविरोधियों, प्रतिक्रांतिकारी ताकतों व गुण्डों का सफाया किया गया।

इसमें भूमिहीन व गरीब किसानों पर निर्भर होते हुए, जरूर मध्यम किसानों के हितों को भी ध्यान में रखना चाहिए। जनता के उत्पादन को बढ़ाने व उनके लिये कल्याणकारी कार्यक्रमों को योजनाबद्ध ढंग से संचालित करने के द्वारा पीड़ित जनता के जीवन स्तर व क्रय शक्ति को बढ़ाना चाहिए। सिर्फ स्थानीय आर्थिक समस्याओं पर ही नहीं, देश-दुनिया की राजनीतिक समस्याओं पर आंदोलनों को संचालित करने पर ध्यान देना होगा। इसके अनुरूप प्रचार, आंदोलन व निर्माण की रूपरेखा तैयार करनी होगी। सम्राज्यवादियों, उनकी दलाल शासक वर्गों के द्वारा मजदूर-किसान, मध्यम वर्गीय जनता के खिलाफ अपनाई जाने वाली लुटेरी नीतियों के विरोध में राजनीतिक आंदोलनों को संचालित करना होगा। इन्हें वर्गसंघर्ष से जोड़ना होगा। जन आंदोलनों को अर्थवादी चेतना से नहीं, बल्कि राजसत्ता छीननेवाले जनयुद्ध को मदद देने की तरह जोड़ना होगा। जन आंदोलन जनयुद्ध को और मजबूत करने वाले होने चाहिए। इसी क्रम में वे जुझारू जनप्रतिरोध आंदोलनों की तरह विकसित होकर जनयुद्ध में शामिल होंगे।

5. दुश्मन के मुखबिरी व कोवर्ट जाल को ध्वस्त करते हुए, शहादतों व गिरफतारियों के द्वारा खासकर उपर से नीचे तक होने वाले नेतृत्व के नुकसानों को कम करना चाहिए। आत्मसमर्पणों को रोकना चाहिए और गद्दारों के खेल को खत्म करना चाहिए।

मुखबिरी व कोवर्ट जाल को ध्वस्त करने के लिए जनाधार पर निर्भर रहना चाहिए। इस तरह की कार्यक्रम जनता के साथ लिये बिना चलाने से हमारा जनता से अलग होने का खतरा बढ़ता है। जनता की भागीदारी करते हुये नेतृत्व के नुकसानों को उल्लेखनीय स्तर पर कम कर सकते हैं। लेकिन नेतृत्व की तरफ से भी तकनीकी नियमों व गुरिल्ला युद्ध नियमों को लागू करने में थोड़ी सी भी ढील नहीं बरती जानी चाहिए। ऐसा करने से हम नुकसानों को कम नहीं कर सकते।

पार्टी व पीएलजीए में आत्मसमर्पण के रुझान व भगोड़ेवाद को रोकने के लिए पार्टी कतारों व पीएलजीए बलों के बीच क्रांतिकारी राजनीति को व अनुभवों को ले जाने पर ध्यान देना होगा। सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी राजनीतिक रास्ता ही जनमुक्ति के लिए एक मात्र रास्ता है, इस पर एक बार संकल्प लेने के बाद, उस राजनीति के लिए दुश्मन के सामने सिर न झुकाकर, खून की आखरी बूंद तक लड़ने के क्रांतिकारी राजनीतिक संकल्प को पार्टी कतारों व पीएलजीए बलों में बढ़ाना होगा। क्रांतिकारी आंदोलन को धोखा देकर दुश्मन के पाले में जाने वाले गद्दारों के खेल को खत्म करने के लिए विशेष ध्यान देना होगा। अपनी

लिए बदलती परिस्थितियों में हमारी राजनीतिक-सैनिक लाइन पर, बदलती दुश्मन की योजनाओं, धोखेबाजी की कार्यनीति व चालबाज पद्धितियों, कोवर्ट पद्धितियों, आत्मसमर्पण योजनाओं वगैरा पर जब का तब पीएलजीए कमांडरों, योद्धाओं को सैद्धांतिक-राजनीतिक समझदारी बढ़ानी चाहिए। इसके द्वारा उन्हें पूरा तैयार कर, उनकी जागरूकता, तेज गती, गुप्तता, गतिशीलता, दृढ़संकल्प, आत्मरक्षा-आक्रमण कार्यनीति को विकसित करना चाहिए। इससे दुश्मन के हमलों से पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनसत्ता के अंगों व जनसंगठनों तथा क्रांतिकारी आंदोलन को बचाते हुए, कार्यनीतिक जवाबी हमलों को संचालित करने में निपुणता हासिल कर सकते हैं।

3. वास्तविक परिस्थितियों को गहराई से समझने के लिए विशेष अध्ययन जरूरी है।

विशेष अध्ययन न करने से किसी भी विषय पर वास्तविक समझदारी बढ़ाना संभव नहीं है। तथ्यों से जोड़े बिना लिये जाने वाले निर्णय मनोगत रूप ले सकते हैं। हम हवा में तलवार भांजते रह सकते हैं. परिस्थितियों में आने वाले बदलावों (जनता की स्थिति, दुश्मन की परिस्थिति और टेरेन की स्थिति) को पहचान कर सही समय में दुश्मन की कमजोरियों को इस्तेमाल कर पर्याप्त कार्रवाई लेना संभव होता है। लेकिन इसके लिए जो निपुणता जरूरी है वह आसानी से हम हासिल नहीं कर सकते। बदलावों को जानने की तैयारी, गहराई से जांच करने द्वारा ही इस शक्ति (निपुणता) को हम पा सकते हैं। इसके जरिये पहलकदमी को हमारे हाथ में रखते हुए दुश्मन की कमजोरियों को पहचान कर सकते हैं। भौतिक परिस्थितियों के अनुरूप समग्र योजना बना सकते हैं। स्वतस्फूर्तता और यांत्रिक रूझान का शिकार होने से बच सकते हैं। गुरिल्ला संघर्ष के साथ हल्के बर्ताव को छोड़ सकते हैं। तैयारियों की समस्या, योजना बनाने की समस्या को पार कर युद्ध कार्रवाइयों व टीसीओसीयों को सफल बनाने के प्रयास कर सकते हैं। आज की कठिन परिस्थिति को पार करने के लिए हमारी पार्टी कमेटियों व कमांडों को इस विषय पर अत्यंत ध्यान देना की जरूरत है।

4. जन आंदोलनों को जनयुद्ध से प्रभावशाली ढंग से जोड़ना चाहिए।

जनयुद्ध के साथ-साथ जनता जिन रोजमर्रा व मूलभूत समस्याओं से परेशानियां व दुख झेल रही है उन पर गंभीरतापुर्वक ध्यान देकर जन आंदोलनों को संचालित करना चाहिए। सामंतवाद के खिलाफ 'जोतनेवालों को ही जमीन' के आधार पर कृषि क्रांति के कार्यक्रम को हमेशा जारी रखना चाहिए।

पुलिस बलों द्वारा गैरकानूनी ढंग से पकड़कर जेलों में कैद किये गये हजारों माओवादी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने की मांग को लेकर देशभर में कई विरोध प्रदर्शन हुए। जेलों में राजनीतिक कैदियों के द्वारा संघर्ष तीव्र होते जा रहे हैं। विभिन्न राज्यों में कई केंद्रीय व जिला जेलों में माओवादी कैदी अलग-अलग ढंग से व समन्वय के साथ अपनी न्यायपूर्ण मांगों पर बड़े पैमाने आंदोलन कार्यक्रमों को लेकर जेल अधिकारियों के खिलाफ संघर्ष चला रहे हैं। राजनीतिक कैदियों के अधिकार दिवसों व सप्ताहों को पालन कर रहे हैं। कई राज्यों में बंद आह्वान किये गये हैं।

देशभर में विभिन्न लालप्रतिरोध इलाकों व गुरिल्ला जोनों में लगातार गयी पीएलजीए गुरिल्ला कार्रवाइयों की वजह से क्रांतिकारी आंदोलन का पूरी तरह सफाया करने का दावा करने वाले दुश्मन के आपरेश ग्रीन हंट के दूसरे चरण का लक्ष्य हासिल नहीं हो पाया है। इसलिए दुश्मन व्दारा ग्रीन हंट के तीसरे चरण के लिए तैयारियां पूरी करते हुए फिर एक बड़े हमले की योजना बनाई जा रही है।

हमारा क्रांतिकारी आंदोलन कठिन परिस्थिति का सामना करने के बावजूद, देशभर में क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने हेतु शोषक-शासक वर्गों के द्वारा जारी फासीवादी आपरेशन ग्रीन हंट का मुकाबला करते हुए आंदोलन को आगे बढ़ाने के क्रम में हमारे कई प्रिय कामरेडों ने अपने अनमोल प्राणों को न्योछावर किया है। इस के साथ-साथ हमारी पूरी पार्टी, पीएलजीए व जनसंगठन व लाखों पीड़ित जनता द्वारा चलाये जा रहे जनयुद्ध के परिणामस्वरूप हमने इस सालभर में निम्न लिखित सफलताएं पाई हैं :

1. भा.क.पा. (माओवादी) और भा.क.पा. (एम-एल) नक्सलबाड़ी का एक ही पार्टी के रूप में विलय हुआ।
2. दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए आंदोलन को बचाने में सफल हुई। छोटा, मध्यम व कुछ बड़े किस्म के कार्यनीतिक जवाबी हमलों के जरिये दुश्मन के बलों को एक हद तक नुकसान करने में कामयाब हुई।
3. लोक सभा चुनावों का बहिष्कार अभियान व इसके तहत संचालित किये गये पीएलजीए के प्रतिरोध अभियान सफल हुये।
4. गुरिल्ला जोनों में व अन्य लालप्रतिरोध इलाकों में विभिन्न आर्थिक व राजनीतिक समस्यओं पर जन आंदोलन जारी हैं।

5. क्रांतिकारी जन कमेटियों का निर्माण व उनके विस्तार जारी है।
6. पार्टी व पीएलजीए का बोल्शेवीकरण करने के अभियान के तहत अध्ययन कक्षाओं को संचालित करना, गलतियों को सुधारने का प्रयास जारी है।
7. दुश्मन के मनोवैज्ञानिक युद्ध का मुकाबला करने के लिए क्रांतिकारी प्रचार एक हद तक करने में सफल हुई।

दुश्मन के हमले की योजना

केंद्र व राज्य सरकारें एक तरफ पिछले दो-तीन सालों में माओवादी हिंसा को उल्लेखनीय स्तर पर कम हो जाने व कुछ इलाकों में नक्सलवाद को पूरी तरह नेस्तनाबूत करने के दावे कर रही हैं। दूसरी तरफ अभी भी 'देश की आंतरिक सुरक्षा' के लिए वामपंथी उग्रवाद एकमात्र सबसे बड़ा खतरा मानते हुए हमारे आंदोलन के इलाकों में अर्द्धसैनिक, कमांडो व विशेष पुलिस बलों की तैनाती बड़े पैमाने पर कर रही हैं। गुरिल्ला जोनों में व हमारे आंदोलन के विस्तार कर रहे/विस्तार होने की **संभावना वाले** इलाकों में नये पुलिस कैंपों को बना रहे हैं। उदाहरण के लिए, पिछले सालभर में दंडकारण्य में 30 व ओड़िशा में 6 नये पुलिस कैंपों को बनाया गया है। कारपेट सेक्यूरिटी को और मजबूत कर रहे हैं। थानों व कैंपों को किलेबंदी कर रहे हैं। पुलिस कैंपों पर माओवादी गुरिल्ला दस्ते के सरप्राइज हमलों को रोकने के लिए उनकी गतिविधियों को पहले ही पहचानने की ग्राउण्ड सेन्सर व्यवस्थाओं को निर्माण करने का निर्णय किये हैं। पुलिस बलों को कोल्ट 7.62, कोल्ट 5.56 जैसे अमेरीकी आधुनिक हथियार उपलब्ध करने के लिए करोड़ों रुपया खर्च कर रहे हैं।

पीएलजीए द्वारा बड़े पैमाने पर लागू किये जाने वाले माइन युद्धतंत्र पर चोट पहुंचाने के लिए बम डिस्पोजल दस्तों को आधुनिक कपड़े व सामग्री से लैस कर रहे हैं। माओवादी प्रभावित सभी इलाकों में आंध्रप्रदेश के ग्रेहाउण्ड्स **बलों** की तर्ज पर विशेष कमांडो बलों को विकास करने के लिए कई नये पुलिस प्रशिक्षण केंद्रों को खोल रहे हैं।

युद्ध स्तर पर रोड़, पुल व 2,199 मोबाइल टावर के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किये हैं। इन्हें निर्माण करने के लिए ठेकेदार सामने नहीं आने की जगह पुलिस बलों द्वारा ही निर्माण कर रहे हैं। नक्सल प्रभावित इलाकों में काम कर रहे सुरक्षा बलों के बीच तेजी से सूचना आदान-प्रदान करने के लिए जहां मोबाइल फोन नेटवर्क उपलब्ध नहीं है उन अंदरूनी इलाकों में बलों को 3,500 सेटेलाइट फोन

पीएलजीए में कमजोरियां बहुत गहराई से मौजूद हैं। पीएलजीए के अंदर पार्टी कमेटियों व कमांडों की मुख्य कमजोरी है - हमारे सिद्धांत को गहराई से समझने में, पार्टी बुनियादी दस्तावेजों को खास तौर पर रणनीति-कार्यनीति के सार को समझने में, इन्हें हमारे इलाकों में जारी जनयुद्ध या गुरिल्ला युद्ध व विशेष परिस्थितियों **पर लागु करने में** होनेवाली गलतियां। **इन** सैद्धांतिक, राजनीतिक **कमजोरियों की** वजह से उन में जनयुद्ध को आगे ले जाने के लिए आवश्यक प्रभावशाली नेतृत्व देने में, सामने आनेवाली समस्याओं को निपटने में पर्याप्त क्षमता का अभाव है। यानी उन्हें विशेष परिस्थितियों पर (जनता की स्थिति, टेरेन की स्थिति, दुश्मन की परिस्थिति पर) पकड़ नहीं है। इसलिए वे विशेष लक्ष्यों को तय करने में, परिस्थिति के अनुरूप कठिन राजनीतिक-सैनिक प्रशिक्षण देने में, वैज्ञानिक राजनीतिक-सैनिक चेतना को बढ़ाने में विफल हो रहे हैं। सैनिक अनुशासन को ढीला कर रहे हैं। स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर हो कर युद्ध संसाधनों को इकट्ठा नहीं कर पा रहे हैं। हथियारों, गोलाबारूद, विस्फोटक पदार्थों को सुरक्षिति न रख पाने व बचाने के कारण नुकसान होने की स्थिति पैदा हो रही है। जनता पर निर्भर होने का मतलब क्या है? इसे न समझने की वजह से उनके सहयोग को पूरी तरह लेने में वे अक्षम हैं। इन गलतियों से बाहर लाकर आज हम सामना कर रहे अत्यंत कठिन परिस्थितियों के बीच ही जनयुद्ध को स्वतंत्र रूप से संचालन करने वाली मजबूत व प्रभावशाली ढंग से राजनीति-सैनिक कमेटियों, कमांडों, योद्धाओं, जनमिलिशिया व पूरी पीएलजीए को संगठित करने के लिए पार्टी कमेटियों, कमीशनों व कमांडों चेतनापूर्वक व योजनाबद्ध ढंग से ध्यान देना होगा।

2. देशभर में बढ़ रहे दुश्मन के चौतरफा हमले के प्रतिरोध करने में अत्यंत मुख्य कार्यभार है जनता को राजनीति तौर पर जागरूक व गोलबंद करना।

दुश्मन के 'विकास' व 'झूठे सुधारों' के प्रभाव से बचाते हुए, उनके सैनिक हमले का मुकाबला करते हुए चेतनापूर्वक व सृजनात्मक रूप से पीड़ित जनता को असली विकास के लिए लड़ने लायक लोगों की वर्ग चेतना को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। दुश्मन के मनोवैज्ञानिक युद्ध का मुकाबला करने लायक, उस प्रभाव से बचाने लायक हमारे प्रचार व आंदोलन का कार्यक्रम रहना चाहिए। लोगों में मुश्किलों का सामना करने की क्षमता को, साहसिक लड़ाकू चेतना को बढ़ाना चाहिए। दूसरी तरफ हमारे पीएलजीए की शक्ति व क्षमता अनुरूप कार्यनीतिक जवाबी अभियानों को संचालित करते हुये ही आज की परिस्थितियों में हम हमारे बलों को बचाते हुए दुश्मन के बलों का नाश कर सकते हैं। इसके

भागदारी ली जानी चाहिए। हर घर जनयुद्ध में भागदारी होना चाहिए। जनता को जनमिलिशिया में संगठित करना चाहिए। जनमिलिशिया को सक्रिय रूप से काम करने लायक जो हथियार (रायफल, भरमार/भराटी, माइन, ग्रनेड़ आदि) मिले उनसे लैस करना चाहिए। इसके लिए विषेश प्रयास करना चाहिए। प्रचार, **वर्ग संघर्ष**, जनयुद्ध-गुरिल्ला युद्ध, निर्माण, अध्ययन हर रोज करना चाहिए। राजनीतिक तौर पर पहलकदमी अपने हाथ में रखते हुए, युद्ध की हर जरूरत को कैसे इकट्ठा किया जाये, सृजनात्मक तरीके से सोचना होगा। इन्हें समन्वय करने के लिए जरूरी काम-काज की योजना बनानी चाहिए। विभिन्न किस्म की युनिटों को - जनमिलिशिया यूनिट, एलओएस, एलजीएस, प्लाटून, कंपनी, गुरिल्ला बटालियन अपने-अपने राजनीतिक, सैनिक कार्यभारों को सक्रिय रूप से अमल करने लायक विकसित होना चाहिए। वे हमेशा किसी न किसी कम्युनिस्ट कार्यकलापों में रहनी चाहिए। सक्रिय कार्यक्रम के बिना डेरा में सीमित नहीं रहना चाहिए। लोगों में राजनीति, सैनिक, निर्माण व संघर्ष संबंधित काम करने के लिए, लोगों के काम-काज में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए उत्साह **दिखाना** चाहिए।

पीएलजीए बलों में संख्या को बचाने पर ध्यान देना चाहिए। संख्या को बढ़ाने की नीति को अमल करना चाहिए। कठिन राजनीति-सैनिक प्रशिक्षण को विकसित करना चाहिए। आज की कठिन स्थिति में वास्तविक परिस्थिति पर निर्भर होकर काम करना चाहिए। पहलकदमी **दिखानी** चाहिए। मुश्किलों का सामना करने पर उन्हें सहन करते हुए काम करना चाहिए। पार्टी **व्दारा** लिये गये निर्णयों को सफलातपूर्वक **लागू** करने के लिए सृजनात्मकता **दिखानी** चाहिए। बाद में आचरण की समीक्षा करनी चाहिए। पर्याप्त सबक लेकर आचरण **को विकसित करना** चाहिए। पीएलजीए **योद्धाओं को** अपने मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद सिद्धांत के आधार **पर विकसित होते हुये**, हमेशा नवजनवादी क्रांति के लक्ष्य के लिए, आखिर समाजवाद-साम्यवाद के लिए मजबूती से लड़ना चाहिए। अपने अनुभवों को माओवादी गुरिल्ला युद्धक नियमों से जोड़ते हुये अपने ज्ञान को वैज्ञानिक ज्ञान में तब्दील करना चाहिए।

पीएलजीए के संघर्ष के कार्यभार

1. जनयुद्ध-गुरिल्ला युद्ध को विकसित करने के क्रम में सामना आ रही जटिल समस्याओं से निपटने लायक पीएलजीए के अंदर पार्टी कमेटियों, कमांडों व योद्धाओं को सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक रूप से तैयार करना चाहिए।

उपलब्ध कराने का निर्णय केंद्र सरकार ने लिया है। माओवादियों की सप्लाई को रोकने के लिए सभी तरह के मार्गों को बंद करने पर गंभीर प्रयास कर रहे हैं।

देश के पूर्वी व मध्य, दक्षिण-पश्चिम राज्यों के अंदरूनी इलाकों में लगातार 'घेराव करो-सर्च करो' (कार्डन एण्ड सर्च) अभियानों, राज्यों की सीमाओं के बीच हर महीने कम से कम एक बार संयुक्त अभियानों व कूम्बिग अभियानों को और तेज किये हैं। सूचना मिलने के तुरंत बाद बड़े पैमाने पर अभियानों को चला रहे हैं। इन अभियानों में अपने बलों की सुरक्षा के लिए और माओवादी गुरिल्लाओं की खोज करने के लिए ड्रोनों का इस्तेमाल दिन ब दिन **बढ़ रहा है**। पुलिस मुखबिरी जाल को मजबूत कर रहे हैं। 26 दिसम्बर 2013 से 1 जनवरी 2014 तक एक सप्ताहभर 9 राज्यों में 40 हजार अतिरिक्त अर्द्धसैनिक बलों व राज्य पुलिस बलों के साथ पहली बार देशव्यापी विशेष दमन अभियान को संचालित किये हैं। इस तरह का दूसरी दमन अभियान 19 से 27 मार्च 2014 तक 70 पुलिस महानिरीक्षकों (आईजीपी) के नेतृत्व में लगभग एक लाख अर्द्धसैनिक बल, 6 हजार कमांडो बल, चार इज्रेयल एरोन खुफिया विमान व राडारों से लैस कई माइनप्रूफ गाड़ियों को तैनात कर माओवादी आंदोलन सक्रिय रहने वाले 6 राज्यों में संचालित किये हैं। तमिलनाडू, कर्नाटक, केरल राज्यों की सीमाओं में अभूतपूर्व ढंग से माओवादियों का दमन करने के लिए योजना बनाने, आधुनिकी तकनीक के इस्तेमाल, पुलिस बलों को विशेष प्रशिक्षण व सर्च अभियान बढ़े हैं। उदाहरण के लिए, केरल के पुलिस बलों को पोलारीस आल टेरेन आफ-रोड़ गाड़ियों व पुलिस बलों को अस्साल्ट डाग यूनिटों को उपलब्ध करवा रहे हैं। इन प्रतिक्रांतिकारी अभियानों का लक्ष्य है क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलना व जनता में सफेद आतंक को फैलाना।

जनसंगठन व मिलिशिया कार्यकर्ताओं व साधारण जनता को बड़े पैमाने पर गिरफ्तार करते हुए, गैरकानूनी ढंग से केस लादकर जेल भेज रहे हैं। खासकर, पार्टी के केंद्रीय व राज्य नेतृत्व का सफाया करने के लिए ध्यान देने के साथ गांव स्तर के नेतृत्व को चोट पहुंचाने के लिए फर्जी मुठभेड़ व अंधाधुंध फायरिंग कर रहे हैं। क्रांतिकारी जनता व कतारों को स्फूर्ती देनेवाले हमारे प्रिय अमर शहीदों के स्मारक वेदियों को बड़े पैमाने पर ध्वस्त कर रहे हैं। वैमानिक हमले (हेलिकाप्टर व ड्रोनों के जरिये) करने के क्षेत्र तैयार हो रहे हैं। हेलिपेडों व विमानाश्रयों को युद्ध स्तर पर निर्माण कर रहे हैं। वास्तव में इस हमले का लक्ष्य है जनयुद्ध के जरिये निर्माण हो रही वैकल्पिक क्रांतिकारी जनतांत्रिक सरकारों को ध्वस्त करने, साम्राज्यवादियों व बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लूट के लिए मार्ग सुगम करने **के**

अलावा कुछ नहीं है। उदाहरण के लिए, छत्तीसगढ़ के दल्ली-राजहरा-रावघाट-जगदलपुर रेल मार्ग को निर्माण कर रावघाट खदान को खोलने के लिए तैनात की जाने वाली और 10 बटालियन केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों के खर्च को बहुराष्ट्रीय कंपनियां पूरी तरह उठाने का समझौता करना।

क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने के लक्ष्य से आंदोलन के सभी इलाकों में सरंडा, सुकमा व बीजापुर के मॉडल को देशभर में विस्तार करते हुए केंद्र व राज्य सरकारें सुधार कार्यक्रमों को तेज कर रही हैं। जनजागरण मेळाव, पुलिस सद्भावना यात्रा, जनमैत्री, सहपंक्ति भोजन, गांधीवादी पुलिसिंग, सिविक एक्शन प्रोग्रामों को विस्तार कर रहे हैं। माओवादियों की वजह से विकास में रुकावट होने का प्रचार बड़े पैमाने पर कर रहे हैं। पुलिस, अर्द्धसैनिक व भारतीय सेना में तथा अन्य सरकारी नौकरियों में भर्ती करने के लिए रोजगार मेले आयोजित कर रहे हैं। व्यापक तौर पर आजीविका प्रशिक्षण केंद्रों (Livelyhood Colleges) को स्थापित करने और बेरोजगारी भत्ता देने के नाम से नौजवानों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहे हैं। एल.आई.सी. रणनीति के तहत पूरा सरकारी यंत्र प्रतिक्रांतिकारी भूमिका निभाने की तरह पुनरस्थापित कर रहे हैं। नये केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने आदेश दिया है कि नक्सल प्रभावित इलाकों में सुरक्षा व विकास योजनाएं उनके गृह मंत्रालय के अधीन काम करने वाली एकीकृत कमांड के दायरे में लाया जाएं।

जनविरोधियों को एकजुट कर प्रतिक्रांतिकारी संगठनों को गठित करना जारी है। उत्तर छत्तीसगढ़ में जशपुर जिले में ऐसे और एक माओवादी विरोधी आंदोलन को तथा एओबी के मलकानगिरी जिले में मलकानगिरी आदिवासी संघ को गठित कर माओवादी विरोधी पोस्टर अभियान को शुरू किये हैं। महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले के पुलिस 'शोधयात्रा' चला रही है।

लोकयुद्ध के पथ के जरिये जनता द्वारा हासिल की गयी सफलताओं को रोकने के लिए लुटेरे शोषक-शासक वर्गों के द्वारा पहले की 'आत्मसमर्पण नीति' में बदलाव करते हुए उसको एक प्रमुख कार्यनीति के तौर पर आगे ला रहे हैं। पार्टी व पीएलजीए के उच्च स्तर से लेकर साधारण जनता तक - को क्रांतिकारी मार्ग से अलग कर पतन करने के लिए अत्यंत निच पद्धितियों को लागू कर रहे हैं. दंडकारण्य में पुलिस प्रशासन के द्वारा पुलिस चेतना नाट्य मंच को गठित कर माओवादी विरोधी सांस्कृति प्रदर्शन संचालित किया जा रहा है। आत्मसमर्पण से हासिल होने वाली गुलामी को 'खुशहाल जिंदगी' कहकर जनता को गुमराह करने के लिए लुटेरी सरकार यंत्र पूरी तरह उतर कर गोबेल्स प्रचार कर रही है।

मनोवैज्ञानिक युद्ध को तेज कर रही है। बड़े-बड़े रंगीन पोस्टर के द्वारा माओवादी आंदोलन पर कहर बरपा रही है। माओवादी पार्टी के नेताओं के सिर पर दाम 25 करोड़ रुपयों तक बढ़ा दिये हैं। इसका लक्ष्य है जनता को लालच दिखाकर क्रांति के खिलाफ प्रतिक्रांति को विस्तार कर क्रांति को पूरी तरह उखाड़ फेंकना।

हाल ही में लोक सभा चुनावों के बाद सत्ता में आयी मोदी नेतृत्व की भाजपा-एनडीए सरकार तुरंत नक्सल प्रभावित राज्यों के उच्चस्तरीय अधिकारियों के साथ दो बैठके कर कई महत्वपूर्ण निर्णय ली है। इसमें नक्सल विरोधी अभियानों में हेलिकाप्टरों का इस्तेमाल करने और अधिक संख्या में केंद्रीय अर्द्धसैनिक बटालियनों की तैनाती प्रमुख हैं। अभी चार नागा बटालियनों को छत्तीसगढ़ में तैनात किया है। देश में 'उग्रवाद', 'अलगावाद' खासकर 'वामपंथी उग्रवाद' को समाप्त करने की घोषणा की। आपरेशन ग्रीन हंट के तिसरे चरण के लिए तैयारियां पूरी करने के प्रयास कर रहे हैं। नक्सल इलाकों में काम करने आई.पी.एस. अधिकारियों को आकर्षित करने के लिए, पुलिस बलों का मनोबल बढ़ाने के लिए समयावधी के पहले (आउट-आफ-टर्न) पदोन्नती, विशेष नकद पुरस्कार, मनचाही जगह पर निर्वाचन, अन्य सुविधायें देने का वादा किया। नई सरकार ने जोर दिया कि देश में 'विकास' के लिए, आवश्क विदेशी पूंजीनिवेश आकर्षित करने के लिए एक 'शांतिपूर्ण वातावरण' तैयार करना जरूरी है। यानी, लोगों के खान-पान, कपड़ा और मकान पर ध्यान देने व उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के बजाय सरकार उनके खिलाफ हजारों फौज भेजने जा रही है। 'विकास' के नाम पर संघर्षरत जनता और उनके नेतृत्व पर चलाये जा रहे फासीवादी हमलों को और भी व्यापक स्तर पर तेज करने के लिए सरकार अपने आपको तैयार कर रही है।

कामरेडों!

हमारा क्रांतिकारी आंदोलन कठिन परिस्थिति व मुश्किलों के दौर का सामना कर रहा है। पहले कभी सामना नहीं किये गये सवालों को आज हम सामना कर रहे हैं। हमारी सीसी चौंथी मीटिंग में, विभिन्न राज्य/स्पेशल एरिया/स्पेशल जोन प्लीनमों में इस परिस्थिति की समीक्षा कर हाल ही में आंदोलन सामना कर रहे सवालों व समस्यओं को पहचान की है। इन्हें सामना करने के लिए हमारी पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए द्वारा दृढ़संकल्प के साथ काम करना जरूरी है। वह अपने आपको मजबूत करने के लिए एक समग्र रणनीति के तहत, हर एरिया के लिए विशेष कार्यनीति व योजना को बनाना चाहिए। इसके अनुरूप जनता को जागरूक करना चाहिए। जनता की सेवा करने के कार्यक्रमों में पीएलजीए द्वारा सक्रिय